अध्याय - ४

विद्यार्थियोंके लेखनदोष और उनके कारणोंका अभ्यास

४.१ प्रस्तावना

४.२ निबंध लेखनद्वारा पाई जानेवाली गलतियाँ

४.३ हिन्दी लेखन-दोष प्रकारोंका विश्लेषण

४.४ हिन्दी लेखन-दोष कारणोंका विश्लेषण

४.५ लेखन-दोषोंपर उपाययोजना

४.६ समारोप.

9. sampling

४.१ प्रास्ताविक :

प्रकरण तीनमें हिन्दी शब्द-उच्चारणोंके दोष-प्रकारोंका और कारणोंका विश्लेषण किया गया है । प्रस्तुत प्रकरणमें लेखन-दोषोंकी कारण मीमांसा करनेका प्रयास किया है ।

लेखनदोष ढूँढनेके लिए पाँचवी से सातवी कक्षा तकके विद्यार्थियोंको एक निबंध लिखनेके लिए दिया गया था । अर्थातही निबंधका विषय विद्यार्थियोंकी उम्र, स्तर और भाषाज्ञान आदि बातोंको ध्यानमें लेते हुए चुना था ।

इसके अतिरिक्त शब्द उच्चारणके दोष और लेखन-दोष ढूँढनेके लिए अध्यापकोंको एकत्रित रूपमेंही प्रश्नावली दी गयी थी । स्पष्टही है कि, उच्चारण-दोषोंके समान लेखनदोषोंके कारणोंको जान जानने के लिए तीस अध्यापकोंको प्रश्नावली दी गई थी ।

प्रस्तुत प्रकरणमें इसीके बारेमें विस्तृत रूपमें जानकारी दी गई है ।

४.२ निबंध लेखनद्वारा पाई जानेवाली गलतियाँ : 9

मराठी माध्यमके माध्यमिक स्कूलके विद्यार्थियोंके लेखन-दोष ढूँढनेके लिए पाँचवीसे सातवी कक्षातकके विद्यार्थियों को निबंध दिया गया था । कौन ?

पाँचवी कक्षाके ३० विद्यार्थी, छटी कक्षाके ३५ और सातवी कक्षाके ३५ अर्थात कुल १०० विद्यार्थियोंको निबंध लेखन दिया गया था । निबंध लेखनका विषय विद्यार्थियोंकी उम्र, बौध्दिक क्षमता और उनकी हिन्दी शब्दसंपत्ती आदिके बारेमें विचार करकेही निबंध लेखन दिया गया था । पाँचवी कक्षाके लिए ` मेरा तोता` छटी कक्षाके लिए ` मेरी पाठशाला ` और सातवी कक्षाके लिए ` बगिचा ` यह विषय दिये थे ।

इन सभी निबंधोंकी जाँच करनेके बाद, लिखते समय अधिकांश विद्यार्थी कौनसी गलतियाँ करते हैं, यह हम सारणी क्रमांक ४.१ में देखेंगे ।

सारणी क्रमांक ४.१

पाँचवी कक्षाके विद्यार्थियोंनें निबंध-लेखनद्वारा पाईं जानेवाली गलतियाँ

अ.क्र.	लेखन दोष	विद्यार्थी संख्या	प्रतिशत
१)	लिखते समय अनुनासिक शब्दोंपर अनुस्वार नहीं देते । उदा. आँखे, आखे, संध्या-सध्या, बातें-बाते	२२	७३.९०
२)	अनावश्यक मात्राएँ देते हैं । उदा. कुछ-कुच्छ, नीचे-नीच्चे	२०	६६.७०
३)	-ह्रस्व-दीर्घ की गलतियाँ करते हैं । उदा. ऊपर-उपर, कुछ-कूछ, मित्र,मीत्र इ.।	३०	१००.००
४)	` ठ ` की जगह ` ट ` लिखते है । उदा. मीठी-मीठी	१५	५०.००
५)	आवश्यक है वहाँ चंद्रबिंदी नहीं देते । उदा. हँसकर-हसकर, वहाँ-वहा, यहाँ-यहा, पाँच-पाच इ.	२५	८३.३०
६)	मातृभाषाके समान कुछ शब्दोंका प्रयोग करते हैं । पानी-पाणी, दो-दोन, मदद-मदत, पसंद-पर्संत इ.	२६	८६.७०
७)	संयुक्ताक्षर विद्यार्थी ठीक ढंगसे नहीं लिखते । उदा. स्टेशन-टेशन, प्लेटफॉर्म-पेल्टफ्राम इ.	२१	७०.००
८)	कुछ शब्दोंका लेखन उच्चारण ध्वनिनुसार करते है । उदा. बहुत-ब्होत	२५	८३.३०
९)	ए, और ऐकी गलतियाँ लिखते समय करते हैं । उदा. ऐनक-एनक, एनक-ऐनक, आयनक-अैनक	२५	८३.३०

इस सारणीद्वारा यह दिखाई देता है कि, पाँचवी कक्षामें अ.क्र.१ की गलती ७३.९० प्रतिशत विद्यार्थी करते है । अ.क्र.२ की गलती ६६.७० प्रतिशत विद्यार्थी करते हैं । इसी प्रकार अ.क्र. ३ - १०० प्रतिशत, अ.क्र.५ ५०.०० प्रतिशत, अ.क्र. ५, ८ और ९ की गलती ८३.३० प्रतिशत, अ.क्र.६ - ८६.७० प्रतिशत और अ.क्र. ७ की गलती ७०.०० प्रतिशत विद्यार्थी करते है ।

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट होता है कि, निम्नलिखित क्रमानुसार विद्यार्थी लेखनकी गलतियाँ करते हैं ।

१) विद्यार्थी लेखनमें -ह्रस्व दीर्घकी गलतियाँ करते है ।
२) मातृभाषाके समान कुछ शब्दोंका लेखन करते हैं ।
३) आवश्यक जगह विद्यार्थी चंद्रबिंदी नहीं देते ।
४) कुछ शब्दोंका लेखन उच्चारण ध्वनिनुसार विद्यार्थी करते हैं ।
५) ` ए ` और ` ऐ ` की गलतियाँ करते हैं ।
गलती क्र. ३, ४ और ५ करनेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या समान है ।
६) लिखते समय अनुनासिक शब्दोंपर अनुस्वार नहीं देते ।
७) अनावश्यक मात्राएँ देते हैं ।
८) संयुक्ताक्षर विद्यार्थी ठीक ढंगसे नहीं लिखते ।
९) ` ठ ` की जगह ` ट ` लिखते हैं ।

सारणी क्रमांक ४.२

छटी कक्षाके विद्यार्थियोंमें निबंध-लेखनद्वारा पाई जानेवाली गलतियाँ

अ.क्र.	लेखन दोष	विद्यार्थी संख्या	प्रतिशत
१)	मातृभाषाका प्रभाव लेखनमें होता है। सिखाना-शिकाना, सिपाही-शिपाई, बारह-बारा, शुरू-सुरू	३०	८५.७०
२)	`न` की जगह `ण` लिखते हैं। उदा. मैदान-मैदाण, खेलना-खेळणा	२८	८०.००
३)	-ह्रस्व-दीर्घकी गलतियाँ विद्यार्थी लेखनमें करते है। उदा. ठीक-ठिक, इसकी-ईसकी, कभी-कभि, आती-आति इ.	३०	८५.७०
४)	अनावश्यक मात्रा लगाना हमारा-हामारा, हमें हामें इ.।	२१	६०.००
५)	अनावश्यक वर्ण लगाना। उदा. पीछे-पिच्छे	२१	६०.००
६)	आवश्यक वर्णोंका लोप करना। उदा. अच्छा-आछा, बच्चा-बचा, सच्चे-सचे	२३	६५.७०

इस सारणीद्वारा यह दिखाई देता है कि, छटी कक्षामें अ.क्र. १ की गलती ८५.७० प्रतिशत विद्यार्थी करते है। अ.क्र. २ की गलती ८०.०० प्रतिशत तो अ.क्र. ३ की गलती ८५.७० प्रतिशत विद्यार्थी करते है। अ.क्र. ४ और ५ की गलती ६०.०० प्रतिशत विद्यार्थी करते है, तो अ.क्र. ६ की गलती ६५.७० प्रतिशत विद्यार्थी करते है।

उपयुक्त विवेचनसे स्पष्ट होता है कि निम्नलिखित क्रमानुसार विद्यार्थी लेखनगलतियाँ करते हैं ।

१) मातृभाषाका प्रभाव लेखनमें होता है ।
२) -ह्रस्व-दिर्घकी गलतियाँ करते है ।
३) ` न ` की जगह ` ण ` लिखते है ।
४) आवश्यक वर्णोंका लोप करते हैं ।
५) अनावश्यक वर्ण लगाते हैं ।
६) अनावश्यक मात्राएँ देते हैं ।

सारणी क्रमांक ४.३

सातवी कक्षाके विद्यार्थियोंमें निबंध लेखनद्वारा पाई जानेवाली गलतियाँ

अ.क्र.	लेखन गलतियाँ	विद्यार्थी संख्या	प्रतिशत
१)	-ह्रस्व-दीर्घ की गलतियाँ करते है । उदा. आदि-आदी, दिन-दीन	३०	८५.७०
२)	मातृभाषाका परिणाम लेखनपर होता है । उदा. कुल-स्कूण, क्लर्क-क्लार्क, साथ-सात हाईस्कूल-हायस्कूल	२५	७१.६०
३)	लिखते समय चंद्रबिंदीका लोप करते है । उदा. हँसना-हसना, हैं-है इ.	२५	७१.६०
४)	वचनसंबंधी गलतियाँ करते है । आधे-आधा, अपने-अपना इ.	२२	६३.००
५)	विभक्तिसंबंधी गलतियाँ । (` को ` की जगह ` पर ` का प्रयोग)	२०	५७.००

सारणी क्रमांक ४.३ द्वारा यह पता चलता है कि, सातवी कक्षाके विद्यार्थी गलती क्र. १ - ८५.७० प्रतिशत, क्र. ३ और ३ - ७९.६० प्रतिशत, क्र. ४ - ६३.०० प्रतिशत तो गलती क्रमांक ५ - ५७.०० प्रतिशत विद्यार्थी करते हैं ।

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट होता है कि, निम्नलिखित क्रमानुसार विद्यार्थी लेखन गलतियाँ करते है -

१) -ह्रस्व दीर्घकी गलतियाँ करते है ।
२) मातृभाषाको परिणाम लेखनपर होता है ।
३) लिखते समय चंद्रबिंदीका लोप करते हैं ।
४) वचनसंबंधी गलतियाँ करते हैं ।
५) विभक्तिसंबंधी गलतियाँ करते हैं ।

४.३ <u>हिन्दी लेखन-दोष प्रकारोंका विश्लेषण</u> :

हिन्दी अध्यापकोंको जो प्रश्नावली दी गई थी, उसमें (प्र.क्र.११ अ) मराठी माध्यिक विद्यार्थी हिन्दी लिखते समय लेखनकी जो गलतियाँ करते हैं, उसकी सूची शिक्षकोंको दी गई थी । उन लेखन-दोषोंसे सहमत होनेवाले विधान के सामने (✓) ऐसा चिन्ह करनेके लिए कहा गया था । हिन्दी अध्यापकोंने इस प्रश्नको दिया हुआ प्रतिसाद निम्न सारणीद्वारा (सारणी क्र. ४.४) बताया गया है ।

सारणी क्रमांक ४.४

हिन्दी लेखन दोषोंसे सहमत शिक्षक संख्या

अ.क्र.	गलतियोंके विधान	अध्यापक संख्या	प्रतिशत
१)	ह्रस्व-दीर्घकी गलतियाँ करना। (उदा. उँचा, कइ, प्रतिक, फुल इ.)	२६	८६.७०
२)	आवश्यक अनुस्वारोंको छोडना, और अनावश्यक अनुस्वार देना। (गगा, सोंचने, नही, हमे इ.)	२८	९३.३०
३)	ए, ऐ, ओ, औ की मात्राओमें गलतियाँ करना। (ऐनक, ऐसा, लिऐ, इ.)	२५	८३.३०
४)	मातृभाषाके अनुसार कुछ शब्द लिखना। (कागद, पर्सत, मदत इ.)	२६	८६.७०
५)	उच्चारणसे गलत धारणा करते हुए शब्द लिखना। (उदा. वहोत, ग्यान, वो, पहेला इ.)	२८	९३.३०

सारणी क्रमांक ४.४ द्वारा यह स्पष्ट होता है कि, अ.क्र. २ और ५ लेखन दोषोंसे सहमत होनेवाले शिक्षकोंकी संख्या ९३.३० प्रतिशत है। उसी प्रकार क्र.१ और ४ लेखन दोषसे ८६.७० प्रतिशत शिक्षक सहमत है, और दोष क्र. ३ से ८३.३० प्रतिशत शिक्षक सहमत है।

उपर्युक्त विवेचनद्वारा यह स्पष्ट होता है कि लेखन दोष क्र. २ और ५ से सहमत होनेवाले शिक्षकोंकी संख्या अधिक है। उसी प्रकार अन्य दोषोंसेही कम अधिक प्रमाणमें शिक्षक सहमत हैं।

उपर्युक्त सारणी क्र. ४.४ द्वारा यह स्पष्ट होता है कि, निम्नलिखित क्रमानुसार विद्यार्थी लेखन-गलतियाँ करते हैं -

१) आवश्यक अनुस्वारोंको छोडना और अनावश्यक अनुस्वार देना ।

२) उच्चारणसे गलत धारणा करते हुए शब्द लिखना ।

३) -ह्रस्व-दीर्घकी गलतियाँ करना ।

४) मातृभाषाके अनुसार कुछ शब्द लिखना ।

५) ए, ऐ, ओ, औ की मात्राओंमें गलतियाँ करना ।

इसी प्रश्नके अंतर्गत उपरोक्त लेखन दोषोंके अतिरिक्त अगर कोई अन्य उच्चारण दोष दिखाई देते हों, तो लिखनेके लिए कहा गया था । कुछ अध्यापकोंने अपने अपने अध्यापन अनुभवानुसार निम्न लेखन गलतियाँ निर्देशित की हैं ।

१) उर्दू-फारसी अक्षरों के नीचे मुक्ता हीं देते ।
(उदा. इन्जाम, जबान इ.)

२) विरामचिन्होंकी गलतियाँ करते हैं ।

३) स्त्रीलिंगी आकारान्त शब्दोंका बहुवचन करते समय अनुस्वार न देना ।
(उदा. बहन-बहने, रात-राते इ.)

४) कुछ हिन्दी स्त्रीलिंग शब्द मराठी जैसे पुल्लिंग लिखते हैं ।
(उदा. पुलीस, सुगंध, आवाज इ.)

५) संयुक्ताक्षर नहीं लिख पाते ।
(उदा. पत्नी, अस्पताल, व्यवस्था इ.)

६) रफार की गलतियाँ करते है ।
(पुर्नविवाह, पुर्नरचना इ.)

७) लेखनमें चंद्रबिंदी एवं अनुस्वार नहीं दिया जाता ।
(आखे, टोकरिया इ.)

८) समुच्चयबोधक ` कि ` हमेशा दीर्घ लिखते हैं । और संबंधकारक ` की ` हमेशा -ह्रस्व लिखते हैं ।

४.४ हिन्दी लेखनदोष कारणोंका विश्लेषण :

प्रस्तुत शोधनिबंधके संदर्भमें हिन्दी अध्यापकोंको जो प्रश्नावली दी गई थी, उसमें (प्र.क्र. १२ अ) मराठी माध्यमिक विद्यार्थी हिन्दी लिखते समय लेखनकी जो गलतियाँ करते हैं, उनके कारणोंकी सूची दी गई थी। इन कारणोंसे शिक्षक सहमत हैं, अथवा नहीं, यह दर्शानेके लिए (✓) ऐसा चिन्ह करनेके लिए कहा गया था।

हिन्दी अध्यापकोंने इस प्रश्नको दिया हुआ प्रतिसाद निम्न सारणी-द्वारा (सारणी क्र. ४.५) बताया गया है।

सारणी क्रमांक ४.५

लेखन-दोषोंके कारणोंसे सहमत शिक्षक संख्या

अ.क्र.	कारणोंके विधान	अध्यापक संख्या	प्रतिशत
१)	विद्यार्थी लेखन ध्यानसे नहीं करते।	३०	१००.००
२)	विद्यार्थियोंके लेखनकी ओर व्यक्तिगत ध्यानका अभाव।	२५	८३.३०
३)	उचित मार्गदर्शनका अभाव।	२०	६६.७०
४)	हिन्दी लेखनपर मातृभाषा का परिणाम।	२९	९६.७०
५)	कुछ शब्दोंको उच्चारित ध्वनि समान लिखना।	३०	१००.००
६)	मात्रा संबंधी गलतियाँ करना।	२८	९३.३०
७)	संयुक्त अक्षर लेखनकी गलतियाँ करना।	२४	८०.००

उपर्युक्त प्रतिसादका निरीक्षण करनेपर यह दिखाई देता है कि, विधान क्र. १ और ५ को मिलनेवाला प्रतिसाद १००.०० प्रतिशत है । उसी प्रकार विधान क्रमांक ३ को ६६.७० प्रतिशत तो विधान क्र. ४ को ९६.७० प्रतिशत, विधान क्र. ६ को ९३.३० प्रतिशत और विधान क्र. ७ को मिलनेवाला प्रतिसाद ८०.०० प्रतिशत है ।

सारणी क्र. ४.५ द्वारा यह दिखाई देता है कि विद्यार्थी जो लेखन-दोष करते हैं, उनके कारण अध्यापकोंने निम्न क्रमानुसार बताए है ।

१) विद्यार्थी लेखन ध्यानसे नहीं करते ।
२) कुछ शब्दोंको उच्चारित ध्वनियाँ समान लिखना ।
३) हिन्दी लेखनपर मातृभाषाका परिणाम ।
४) लिखते समय मात्रासंबंधी गलतियाँ करना ।
५) विद्यार्थियोंके लेखनकी ओर व्यक्तिगत ध्यानका अभाव ।
६) संयुक्त अक्षर लेखनकी गलतियाँ करना ।
७) उचित मार्गदर्शनका अभाव ।

इसी प्रश्नके अंतर्गत उपर्युक्त दोषोंके अतिरिक्त अगर कोइ अन्य उच्चारण दोष दिखायी देते हों, तो लिखनेके लिए कहा गया था । कुछ अध्यापकोंने अपने अपने अध्यापन अनुभवानुसार निम्न उच्चारण गलतियाँ निर्देशित की हैं ।

१) मातृभाषा का लेखन अशुध्द, उसकाही परिणाम हिन्दी भाषापर होता है ।
२) हिन्दी तासिकाएँ अपूर्ण, इसलिए लेखन दोषोंकी ओर दुर्लक्ष किया जाता है ।

३) उर्दू तथा अन्य भाषाओंका प्रभाव हिन्दी लेखनपर होता है ।
उदा. प्रताप-परताप

४) पालकोंका सहकार्य लेखन-दोष सुधारनेमे काम मिलता है ।

५) हिन्दीकी लिपि देवनागरी होनेके कारण विषय आसान लगता है, और अन्जानेमे दूर्लक्ष किया जाता है ।

४.५ लेखन दोषोंपर उपाययोजना :

विद्यार्थियोंके लेखनमें गलतियाँ न हो, इसलिए प्रश्नावलीमें निम्नलिखित उपाययोजनाओंकी सूची दी गई थी । उन उपाययोजनाओंसे सहमत होनेवाले शिक्षकोंकी संख्या सारणी क्रमांक ४.६ में दी गई है ।

सारणी क्र. ४.६

लेखन-दोषोंके उपाययोजनाओंसे सहमत शिक्षक संख्या

अ.क्र.	उपाययोजनाओंकी सूची	शिक्षक संख्या	प्रतिशत
१)	श्रुत-लेखन और अनुलेखनके लिए समय-सारिणीमें तासिका रखी जाए ।	२४	८०.००
२)	विद्यार्थियोंके लेखनदोषोंकी ओर व्यक्तिगत ध्यान देना और योग्य मार्गदर्शन करना ।	२६	८६.७०
३)	निर्बंधोंके आदर्श विद्यार्थियोंके सामने रखना ।	२५	८३.३०
४)	विद्यार्थियोंकी निर्बंध स्पर्धा रखना ।	२६	८६.७०
५)	अक्सर होनेवाली गलतियोंका चार्ट तैयार कर कक्षामें लगाना ।	२८	९३.३०
६)	शुध्द-लेखनके नियमोंका चार्ट सोदाहरण तैयार कर कक्षामें लगाना ।	२८	९३.३०

सारणी क्र.४.६ (आगे शुरू...)

अ.क्र.	उपाययोजनाओंकी सूची	शिक्षक संख्या	प्रतिशत
७)	मातृभाषाके प्रभावसे विद्यार्थी जो गलतियाँ करते हैं, उनको अच्छे ढंगसे समझाना ।	२८	९३.३०
८)	-ह्रस्व-दीर्घ शब्दोंकी सूची तैयार कर कक्षामें लगाना ।	२४	८०.००
९)	मराठी और हिन्दी शब्दोंके लिंगभेद स्पष्ट करना ।	२८	९३.३०
१०)	विद्यार्थियोंके उच्चारण अगर सदोष है, तो लेखनभी सदोष होता है, इसलिए उच्चारणकी ओर ध्यान देना ।	२२	७३.९०
११)	शुध्द लेखनके लिए कुछ गुण रखना चाहिए जिससे विद्यार्थी शुध्द लेखनका अधिक प्रयास करेंगे ।	२६	८६.६०
१२)	शिक्षक जब आदर्श वाचन करते हैं, तब विशेष शब्द कैसे लिखा जाता हैं, इसके बारेमें अध्यापकका योग्य मार्गदर्शन आवश्यक ।	२८	९३.३०

उपर्युक्त सारणीद्वारा यह पता चलता है कि, उपाययोजना क्र. ५,६, ७, ९ और १२ से अधिकाधिक याने ९३.३० प्रतिशत शिक्षक सहमत हैं । उसी प्रकार उपाययोजना क्र. १, ८ से ८०.०० प्रतिशत सहमत है, और उपाययोजना क्र. १० से ७३.३० प्रतिशत शिक्षक सहमत है । उसी तरह उपाययोजना क्र. २, ४ और ११ से ८६.७० प्रतिशत शिक्षक सहमत है ।

इस विवेचनसे स्पष्ट होता है कि, निम्नलिखित क्रमानुसार अध्यापक लेखनदोषोंके उपाययोजनाओंसे सहमत हैं ।

१) अक्सर होनेवाली गलतियोंका चार्ट तैयार कर कक्षामें लगाना ।

२) शुध्द लेखनके नियमोंका चार्ट सोदाहरण तैयार कर कक्षामें लगाना ।

३) मातृभाषाके प्रभावसे विद्यार्थी जो गलतियाँ करते हैं, उनको अच्छे ढंगसे समझाना ।

४) मराठी और हिन्दी शब्दोंके लिंगभेद स्पष्ट करना ।

५) शिक्षक जब आदर्श वाचन करते हैं, तब विशेष शब्द कैसे लिखा जाता है, इसके बारेमें अध्यापकका मार्गदर्शन आवश्यक ।
क्रमांक १ से ५ तक सहमत अध्यापकोंकी संख्या समान है ।

६) विद्यार्थियोंके लेखन दोषोंकी ओर व्यक्तिगत ध्यान देना और योग्य मार्गदर्शन करना ।

७) विद्यार्थियोंकी निबंध स्पर्धा रखना ।

८) शुध्द लेखनके लिए कुछ गुण रखना चाहिए, जिससे विद्यार्थी शुध्द लेखनका अधिक प्रयास करेंगे ।
क्र. ६, ७ और ८ से सहमत अध्यापकोंकी संख्या समान है ।

९) निबंधोंके आदर्श विद्यार्थियोंके सामने रखना ।

१०) श्रुत लेखन और अनुलेखनके लिए समय-सारिणीमें तासिका रखी जाए ।

११) -ह्रस्व-दीर्घ शब्दोंकी सूची तैयार कर कक्षामें लगाना ।
क्र. १० और ११ से सहमत अध्यापक संख्या समान है ।

१२) विद्यार्थियोंमे उच्चारण अगर सदोष हैं, तो लेखनभी सदोष होता है, इसलिए उच्चारणकी ओर ध्यान देना ।

इसी प्रश्नके अंतर्गत उपर्युक्त उपाययोजनाओंके अतिरिक्त अन्य उपाय-योजना लिखनेके लिए कहा था। अध्यापकोंने अपने अपने अध्यापन अनुभवानुसार निम्न लेखन दोषोंपर उपाययोजनाएँ सुझायी हैं।

१) हररोज पाँचसे दस कठिन शब्द दस बार लिखनेके लिए कहना।
२) कंठस्थ करनेपर बल देनेसे विद्यार्थियोंका लेखन सुधार सकते हैं।
३) -ह्रस्व दीर्घ उच्चारणोंका ठीक ढंगसे अभ्यास लेनेपर लेखनदोष सुधार सकेंगे।
४) अक्सर होनेवाले लेखन-दोष एकत्र कर विद्यार्थियोंकी कसौटी (परीक्षा) लेना चाहिए। जिन विद्यार्थियोंके अधिकाधिक शब्द सही होंगे, उन्हें पुरस्कार देकर प्रोत्साहन देना चाहिए।

४.६ <u>समारोप</u> :

प्रस्तुत प्रकरणमें हिन्दी लेखन दोष प्रकार, लेखन दोष कारण, उपाययोजना, शुद्ध लेखनसंबंधित अन्य सुझाव आदिके बारेमें विवेचन किया गया है।

प्रकरण तीन और चारसे संबंधित अर्थात उच्चारण और लेखन दोषोंका निराकरण कैसे किया जा सकता है, उपाययोजना किस प्रकार की जाना चाहिए आदिके बारेमें प्रकरण पाँचमें चर्चा की गयी है।

सारांश, प्रकरण तीन और चारद्वारा प्राप्त सामग्रीका सिंहावलोकन कर निष्कर्ष निकाले हैं और उनपर उपाययोजना सुझायी है।

हिन्दी का उद्देश्य यही है, भारत एक
रहे अविभाज्य। यों तो रूस और
अमरीका जितना है उसका जन-राज्य।

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त